।। जय महावीर।।

समता सर्व मंगल

समता सर्व मंगल - आराधना विधि

समता सर्व मंगल का एक प्रारूप बना है, जिसका अनुक्रमणिका में विस्तार से विवरण दिया गया है।

- हम सभी, विभाग–क्रम (I) से (V) तक की आराधना प्रतिदिन सामूहिक रूप से करने का भाव एवं लक्ष्य रखें, जिसका समय अधिकतम 10 मिनिट लगेगा।
- समता सर्व मंगल की आराधना हमें अपने व्यवसाय स्थल, ऑफिस/फैक्ट्री, प्रतिष्ठान, संस्थान आदि कार्य स्थल पर करनी है। प्रतिदिन कार्य प्रारम्भ से पहले नियोक्ता/मालिक सहित समस्त कर्मचारी व सहयोगीजन को यथासंभव सामूहिक रूप से आराधना करनी है।
- हम अपने संस्थान पर एक स्थान निर्धारित कर इस पुस्तक को सुरक्षित रखने की व्यवस्था बना लेवें। साथ ही मालिक/नियोक्ता अपने समस्त कर्मचारी, सहयोगीजन को 10 मिनिट की इस आराधना को कार्य स्थल पर करने हेतु प्रेरित करें।

अनुक्रमणिका

क्र.	टाइटल	पेज नं.
	प्रस्तावना	4
I	नवकार महामंत्र	6
II	होवे धर्म प्रचार	7
III	मेरी भावना	8
IV	प्रतिदिन के लिए छोटे–छोटे नियम	11
V	मांगलिक पाठ	12
VI	नवकार महामंत्र भावार्थ	13
VII	मांगलिक पाठ – भावार्थ सहित	16

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में मंगलाचरण का प्रमुख स्थान है। मंगलाचरण से विचारों में पवित्रता आती है, जिससे सम्पूर्ण कार्य में उत्साह, उमंग व शान्ति बनी रहती है। मंगलाचरण से ईश्वरीय शक्ति के साथ हमारा सम्बन्ध जुड़ता है। प्रतिदिन किए जाने वाले कार्य के पूर्व मंगलकारी शब्दों का उच्चारण हमारे सम्पूर्ण जीवन में मंगल का संचार करता है। मंगलाचरण से हमारा आभामण्डल तेजस्वी बनता है एवं सामूहिक रूप से मंगल का समाचरण पूरे वातावरण को खुशनुमा एवं ज्योतिर्मय बना देता है।

'समता–सर्व–मंगल' का उपक्रम ऐसे शब्दों से बनाया गया है जिससे सर्वत्र निरन्तर समतामय, मंगलमय सुख का प्रसार हो। नवकार महामंत्र किसी भी व्यक्ति, जाति, समाज एवं धर्म से जुड़े लोगों को, गुणों से परिपूर्ण आत्माओं की शक्ति व तेज को प्रदान करने वाला है। यह हमारे जीवन को सुखमय सुरक्षा प्रदान

करता है।

'होवे धर्म प्रचार' एवं 'मेरी भावना' के शब्द जीवन में नैतिकता, ईमानदारी, सहिष्णुता, समता आदि अनेक सद्गुणों को विकसित करने वाले हैं।

प्रतिदिन की एक प्रतिज्ञा हमारे भीतर आत्मविश्वास की वृद्धि करती है एवं स्वयं के नियंत्रण की शक्ति प्रकट होती है।

'मंगल पाठ' हमें जगत् के सर्वोत्तम मंगलमय आत्माओं से जोड़ता है एवं अपने जीवन को सभी महापुरुषों की ऊर्जा से सुरक्षित, आनन्दित एवं प्रसन्नचित्त अनुभव कराता है।

सार यह है कि **'समता–सर्व–मंगल'** का संगान मालिक से चौकीदार तक हर व्यक्ति अपने प्रतिष्ठान, संस्थान, कार्यालय, दुकान, कारखाना, उद्योग में करे ताकि वहाँ का सम्पूर्ण वातावरण एवं जन–जन एक मंगल स्वरूप का वरण करे।

महामन्त्रो नमस्कारः, काव्यं सद्गुणवर्धकम्।
प्रतिज्ञा मङ्गलं पाठः, समता–सर्व–मङ्गलम्।।

I - नवकार महामंत्र

नमो अरिहंताणं	नमो अरिहंताणं	नमो अरिहंताणं	नमो अरिहंताणं	नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं	नमो सिद्धाणं	नमो सिद्धाणं	नमो सिद्धाणं	नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं	नमो आयरियाणं	नमो आयरियाणं	नमो आयरियाणं	नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं	नमो उवज्झायाणं	नमो उवज्झायाणं	नमो उवज्झायाणं	नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं	नमो लोए सव्वसाहूणं	नमो लोए सव्वसाहूणं	नमो लोए सव्वसाहूणं	नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंचनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

II - होवे धर्म प्रचार

होवे धर्म प्रचार,

प्यारे भारत में।

हाँ होवे धर्म प्रचार,

प्यारे भारत में।।

(1) तजकर निंदा झूठ बुराई,
गले मिले सब भाई-भाई,
बहे प्रेम की धार, **प्यारे भारत में**

(2) मुख से कोई न देवे गाली,
बोली बोले इज्जत वाली
मीठी और रसदार, **प्यारे भारत में**

III - मेरी भावना

नहीं सताऊँ किसी जीव को,
झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
पर-धन-वनिता पर न लुभाऊँ,
संतोषामृत पिया करूँ।।

अहंकार का भाव न रखूँ,
नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को,
कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ।।

रहे भावना ऐसी मेरी,
सरल-सत्य-व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में,
औरों का उपकार करूँ।।

मैत्रीभाव जगत में मेरा,
सब जीवों पर नित्य रहे।
दीन-दु:खी जीवों पर मेरे,
उर से करुणा स्रोत बहे।।

दुर्जन-क्रूर-कुमार्गरतों पर,
क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रखूँ मैं उन पर,
ऐसी परिणति हो जाये।।

गुणीजनों को देख हृदय में,
मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा,
करके यह मन सुख पावे।।

होऊँ नही कृतघ्न कभी मैं,
द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित,
दृष्टि न दोषों पर जावे।।

कोई बुरा कहे या अच्छा,
लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ
या मृत्यु आज ही आ जावे।।

अथवा कोई कैसा भी
भय या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा,
कभी न पद डिगने पावे।।

होकर सुख में मग्न न फूले,
दु:ख में कभी न घबराये।
पर्वत नदी–शमशान भयानक,
अटवी से नहीं भय खाये।।

रहे अडोल–अकम्प निरन्तर,
यह मन दृढ़तर बन जाये।
इष्ट–वियोग अनिष्ट–योग में,
सहनशीलता दिखलाये।।

सुखी रहे सब जीव जगत के,
कोई कभी न घबरावे।
वैर–पाप–अभिमान छोड़ जग,
नित्य नए मंगल गावे।।

घर–घर चर्चा रहे धर्म की,
दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान–चरित्र उन्नत कर अपना,
मनुज–जन्म फल सब पावे।।

IV

प्रतिदिन के लिए छोटे-छोटे नियम

7 दिनों के लिए, जो सरलता एवं सहजता से पाले जा सकें

1	सोमवार	किसी के प्रति बुरा नहीं सोचना
2	मंगलवार	वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करना
3	बुधवार	पैर से किसी चीज को ठोकर नहीं मारना
4	गुरुवार	किसी का मजाक नहीं उड़ाना
5	शुक्रवार	भोजन से पूर्व भगवान का नाम लेकर भोजन करना
6	शनिवार	मोबाइल आदि में गेम नहीं खेलना
7	रविवार	जूठा नहीं छोड़ना

V - मांगलिक पाठ

पूज्य गुरुदेव की अनुज्ञा से -

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा,
सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि,
सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

अरिहंतों का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवली - प्ररूपित धर्म का शरणा।

चार शरणा, दुःख हरणा और न शरणा कोय।
जो भव्य प्राणी आदरे, अक्षय अमर पद होय।।

इति समता सर्व मङ्गल

VI - नवकार महामंत्र भावार्थ

नमो अरिहंताणं

मैं विनयपूर्वक श्रद्धा एवं भक्ति के साथ श्रद्धेय महामानवों की आराधना करता हूँ जिन्होंने क्रोध, मान, माया, लोभ आदि दुर्गुणों पर विजय प्राप्त कर ली है।

I humbly and solemnly worship the revered human beings who have conquered anger, ego, deceit, greed and other vices.

नमो सिद्धाणं

मैं विनयपूर्वक श्रद्धा और भक्ति के साथ श्रद्धेय विशुद्ध आत्माओं की आराधना करता हूँ जो आठ कर्मों के बंधनों से मुक्त हैं।

I humbly and solemnly worship the revered souls who are epitome of purity and who have liberated themselves from all kinds of attachments.

नमो आयरियाणं

मैं विनयपूर्वक श्रद्धा और भक्ति के साथ श्रद्धेय आचार्य की वंदना करता हूँ जो सम्यक चारित्र का सभी प्रकार से स्वयं पालन करते हैं तथा अन्यों से भी पालन करवाते हैं।

I humbly and solemnly worship the revered Spiritual Gurus who practice Right Conduct in all its manifestations and mentor others to practice the Right Conduct.

नमो उवज्झायाणं

मैं विनयपूर्वक श्रद्धा और भक्ति के साथ शास्त्रों के मर्मज्ञ विद्वान उपाध्याय भगवन्तों की वंदना करता हूँ जो दूसरों को भी शास्त्रों का अध्ययन कराते हैं।

I humbly and solemnly worship the revered saints having profound wisdom and scriptural knowledge and who mentor others to gain the Right Knowledge.

नमो लोए सव्वसाहूणं

मैं विनयपूर्वक श्रद्धा और भक्ति के साथ श्रद्धेय साधुओं की वंदना करता हूँ जो सम्यक चारित्र का सभी प्रकार से पालन करते हैं।

I humbly and solemnly worship the revered Saints who practice Right Conduct in all its manifestations.

एसो पंचनमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

विनयपूर्वक श्रद्धा और भक्ति के साथ की गई पंच परमेष्ठी रूप महान् आत्माओं की आराधना सभी पापों का नाश करती है। ऐसी आराधना विश्व के समस्त मंगलों में प्रथम–प्रधान–सर्वश्रेष्ठ मंगल है।

Humbly and solemnly worshiping the above five liberates us from our sins. Among all that is considered auspicious, such a worship is the most auspicious.

VII - मांगलिक पाठ - भावार्थ सहित

चत्तारि मंगलम

अर्थात् – लोक में 4 मंगल हैं।

1. अरिहंता मंगलं 2. सिद्धा मंगलं
3. साहू मंगलं 4. केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं

अर्थात्

1. अरिहंत भगवान मंगल हैं 2. सिद्ध भगवान मंगल हैं
3. लोक में रहे हुए सभी साधुजी मुनिराज मंगल हैं
4. केवली भगवान द्वारा फरमाया गया धर्म मंगल है।

चत्तारि लोगुत्तमा

अर्थात् – लोक में 4 उत्तम हैं।

1. अरिहंता लोगुत्तमा 2. सिद्धा लोगुत्तमा
3. साहू लोगुत्तमा 4. केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

अर्थात्

1. अरिहंत भगवान उत्तम हैं 2. सिद्ध भगवान उत्तम हैं 3.

लोक में रहे हुए सभी साधु मुनिराज उत्तम हैं
4. केवली भगवान द्वारा प्ररूपित धर्म लोक में उत्तम है।

चत्तारि सरणं पवज्जामि

अर्थात् – 4 शरण को मैं ग्रहण करता हूँ।

1. अरिहंते सरणं पवज्जामि
2. सिद्धे सरणं पवज्जामि 3. साहू सरणं पवज्जामि
4. केवलिपण्णतं धम्मं सरणं पवज्जामि

अर्थात्

1. अरिहंत भगवान 2. सिद्ध भगवान 3. लोक में रहे हुए सभी साधुजी मुनिराज 4. केवली भगवान द्वारा प्ररूपित धर्म की मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

1. अरिहंतों का शरणा
2. सिद्धों का शरणा 3. साधुओं का शरणा
4. केवली प्ररूपित धर्म का शरणा

अर्थात्

1. मुझे अरिहंत भगवान का शरण स्वीकार है
2. सिद्ध भगवान का शरण स्वीकार है 3. लोक के

सभी साधुजी मुनिराज का शरण स्वीकार है
4. अरिहंत प्ररूपित धर्म का शरण स्वीकार है।

चार शरणा, दुःख हरणा
और न शरणा कोय।
जो भव्य प्राणी आदरे,
अक्षय, अमर पद होय।।

अर्थात्
ये जो चार शरण हैं,
ये जीवों के दुःखों का हरण करने वाले हैं।
जो भव्य प्राणी इसका आदर सहित
श्रवण/पालन करते हैं, वे अक्षय पद को
प्राप्त कर अमर पद को प्राप्त करने वाले बन जाते हैं।
वे इन चारों की शरण में रहते हुए सिद्ध पद
को प्राप्त कर लेते हैं।

समता सर्व मंगल की भाव युक्त यात्रा

प्रातः कार्य की शुरुआत समता सर्व मंगल सामूहिक रूप से करते हुए एक अद्भुत ऊर्जा का संचय स्वयं में एवं आपसी वर्किंग कार्यशैली में स्थापित होते हुए एक निराला एवं संतोषजनक वातावरण हम सभी के बीच बनता हुआ नजर आ रहा हैं।

यह छोटी सी परन्तु अद्भुत पहल हम सभी के जीवन निर्माण का अलौकिक मार्ग दर्शा रही है।

समता सर्व मंगल की आराधना करते हुए सबकी विकास यात्रा उन्नत हो, मंगलमय हो।

।। मंगलं मंगलं मंगलं ।।

- प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है, चाहे वह अरबों का मालिक हो, चाहे किसी भी संस्थान में सेवा देने वाला अल्पतम वेतन का कर्मचारी भी क्यों ना हो।
- समता-सर्व-मंगल सभी प्राणियों में सुख की इच्छा रूपी समानता को देखता है एवं उन सबके जीवन में सुनिश्चित्त रूप से मंगल का संचार करता है।
- व्यक्ति के जीवन का अधिकाधिक समय व्यवसायिक कार्यों में व्यतीत होता है, अतः अपने-अपने व्यवसायिक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व में किया गया, समता-सर्व-मंगल सभी मनुष्यों एवं व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के सम्पूर्ण वातावरण में एक भव्य मंगल की संरचना करता है, जिससे सम्पूर्ण सृष्टि में अपूर्व सुख का प्रसार होता है।

प्रेषक

सर्व मंगल अभियान

(A unit of SABSJS)

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
दूरभाष : 0151-2270261